कहीं । मैं जानना चाहता हूं कि जहां जहां इस तरह से दाम चढ़ गए हैं वहां वहां ये सही दामों पर मिलें, इसके लिए सरकार ने क्या कारवाई की है ?

श्री कानूनगो: जवाब में मैंने कहा है कि किसी किसी नामी टायर के दाम बढ़ गए हैं क्योंकि उसको ज्यादा लोग चाहते हैं । लेकिन और किस्म के टायर मिलते हैं बाजार में और उनकी कीमत ज्यदा नहीं है ।

श्री विभूति मिश्र : क्या मंत्री महोदय ने इस बात की तहकीकात की है कि बाजार में जो टायर मिलते हैं या ट्यूबज मिलती हैं वे खराब मिलती हैं और यदि की हैं तो इस परनसल जांच का क्या नतीजा निकला है और उससे क्या लाभ हुआ है ?

श्री कानूनगो : मैंने जवाब दिया है कि जांच की गई है और वे खराब नहीं हैं ।

श्री कछवाय : हमारे देश में बहुत से रिक्शा चलाने वाले हैं । उनके लिए कोई अलग से कोटा स्पेशल रखने की क्या आवश्यकता नहीं है ? क्या यह भी सही नहीं है कि उनको टायरों आदि के मिलने में बड़ी दिक्कत होती है ?

श्री कानूनगो : कोटा की जरूरत नहीं है काफी टायर मिलते हैं ।

श्री यशपाल सिंह : टायर ट्यूबज की कीमत बढ़ने का क्या सब से बड़ा कारण यह नहीं है कि टेरिफ एमेंडमेंट बिल लाया गया है जिस में साइकिल इंडस्ट्री को सरकार ने प्रोटैक्शन देना बन्द कर दिया है ?

श्री कानूनगो : मैंने कहा है कि टायर ट्यूब काफी मिलते हैं, कोई नामी टायर नहीं मिलते हैं ।

ट्रैक्टरों के पुर्जों का बनाया जाना

\+

*५७२. **श्री ओंकार लाल बेरवा :**
श्री गोकरन प्रसाद :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री म० ला० द्विवेदी :

क्या **इस्पात, खान तथा भारी इंजीनियरिंग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि अमरीका की ट्रैक्टर बनाने वाली 'केटर पिलर ओवरसीज' नामक कम्पनी तथा भारत की 'लारसेन एण्ड टब्रो लिमिटेड' के बीच एक करार हुआ है जिसके अधीन उसके सहयोग से 'क्रालर चैन' ट्रैक्टरों के पुर्जों का निर्माण किया जायेगा ; और

(ख) यदि हां, तो यह कारखाना कहां पर बनाया जायेगा ?

इस्पात, खान तथा भारी इंजीनियरिंग मंत्रालय में उपमंत्री (श्री प्र० चं० सेठी) : (क) जी, हां ।

(ख) सियोन, बम्बई ।

[(a) Yes, Sir.
(b) Sion, Bombay.]

श्री ओंकार लाल बेरवा : इस फैक्ट्री की क्षमता क्या होगी ?

श्री प्र० चं० सेठी : इस में कई किस्म के क्रालर टाइप के पार्टस बनेंगे ।

अध्यक्ष महोदय : वह कैपेसेटी के बारे में पूछ रहे हैं ।

श्री प्र० चं० सेठी : अभी वह तय नहीं हुई है ।

श्री ओंकार लाल बेरवा : जो विदेशी मुद्रा लगेगी उसको हमारे भारत वाले देंगे या अमरीका वाले देंगे और वह कितनी लगेगी ?

श्री प्र० चं० सेठी : ६० लाख का कैपिटल लगेगा । उस में से तीस लाख फारेन कैपिटल का पार्टिसिपेशन होगा ।

श्री कछवाय : इस कारखाने में जो पुर्जे बनेंगे, उन से हमारी कमी क्या पूरी हो जाएगी या विदेश से फिर भी हमें उनको मंगाना पड़ेगा ?

श्री प्र० चं० सेठी : इससे कमी तो पूरी नहीं होगी । और भी लाइसेंस स्वीकार किये जायें, यह विचाराधीन है ।

Shri Nambiar: As many tractors in the country go out of order for want of spare parts, can this particular company which is being organised produce spares not only of the Crawler tractor but also other types of tractors?

Shri P. C. Sethi: It will be producing spare parts which have been specified under the licences. They are about 7 or 8 categories.

Shri S. C. Samanta: What is the percentage of Crawler tractors used in the country and will this company be able to supply most of them?

Shri C. Subramaniam: The percentage is not available, but the production target fixed during the Third Plan is 500 Crawler tractors.

श्री बड़े : विदेशों से जब ट्रेक्टर इम्पोर्ट किए जाते हैं तो क्या यह सही है कि वे महंगे पड़ते हैं और अब जब पार्टस यहां तैयार होने लग जायेंगे तो यहां के ट्रेक्टर सस्ते होंगे ? यदि हां तो मैं जानना चाहता हूं कि किस परिणाम में वे सस्ते होंगे ?

Shri P. C. Sethi: This has not been worked out.

Shri Bhagwat Jha Azad: What will be the percentage of the share capital held by the two firms, the American and the Indian?

Shri P. C. Sethi: Rs. 60 lakhs would be the share capital and the Indian company would participate to the extent of 50%.

Steel Plant in South India

*573. **Shri S. C. Samanta:**
Shri Subodh Hansda:
Shri M. L. Dwivedi:
Shri B. K. Das:
Shri D. C. Sharma:

Will the Minister of **Steel, Mines and Heavy Engineering** be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 83 on the 16th August, 1963 and state:

(a) whether the firm of Consulting Engineers has since prepared and submitted the report for the setting up of a Steel Plant in South India;

(b) if so, the salient features thereof; and

(c) when the preliminary work are expected to be taken up?

The Deputy Minister in the Ministry of Steel, Mines and Heavy Engineering (Shri P. C. Sethi): (a) No, Sir. The report is expected in February 1964.

(b) Does not arise.

(c) Preliminary works can be started only after the report is received and examined and decisions taken on it.

Shri S. C. Samanta: Has the site been selected in the meantime?

The Minister of Steel, Mines and Heavy Engineering (Shri C. Subramaniam): We have received a preliminary report regarding the sites available. In any event works preparation has to be done at the works site; that has to be selected yet.

Shri Subodh Hansda: Last time also the hon. Minister said that the report was not submitted. Now he has answered that it will be submitted next year. What is the reason for the delay in the submission of the report?

Shri C. Subramaniam: Now an alternative process also is available to use the raw lignite. That is being studied.